



सत्यमेव जयते

Әл-Фараби университетінің 90 жылдығына
және шығыстану факультетіндегі хинди бөлімінің
25 жылдығына арналған

«ҮНДІСТАН ЖӘНЕ ЕУРАЗИЯ ЕЛДЕРІНДЕГІ ҮНДІТАНУ ЗЕРТТЕРУЛЕРІНІҢ БҮГІНІ МЕН КЕЛЕШЕГІ»

тақырыбындағы халықаралық ғылыми-тәжірибелік конференция
МАТЕРИАЛДАРЫ

अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की 90वीं वर्षगांठ और
प्राच्य अध्ययन संकाय के हिंदी विभाग की 25वीं वर्षगांठ को समर्पित

"भारत और यूरेशिया में हिन्दी का वर्तमान और भविष्य"

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय वैज्ञानिक-व्यावहारिक सम्मेलन
के लेखों का संग्रह

ӘЛ-ФАРАБИ атындағы ҚАЗАҚ ҰЛТТЫҚ УНИВЕРСИТЕТІ
अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय

Әл-Фараби университетінің 90 жылдығына және шығыстану
факультетіндегі хинди бөлімінің 25 жылдығына арналған
«ҮНДІСТАН ЖӘНЕ ЕУРАЗИЯ ЕЛДЕРІНДЕГІ ҮНДІТАНУ
ЗЕРТТЕРУЛЕРІНІҢ БҮГІНІ МЕН КЕЛЕШЕГІ» тақырыбындағы
халықаралық ғылыми-тәжірибелік конференция
МАТЕРИАЛДАРЫ

2024 жылғы 13-14 наурыз

अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की 90वीं वर्षगांठ और प्राच्य
अध्ययन संकाय के हिंदी विभाग की 25वीं वर्षगांठ को समर्पित " भारत और
यूरेशिया में हिन्दी का वर्तमान और भविष्य" अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय वैज्ञानिक-
व्यावहारिक सम्मेलन के
लेखों का संग्रह

13-14 मार्च, 2024

Алматы
Қазақ университеті
2024

ӘОЖ 80/81+821.21
КБЖ 812+84 (5Инд)
Ә 49

РЕДАКЦИЯСЫН БАСҚАРҒАН:

Жансейт Қансейітұлы Түймебаев, Әл-Фараби атындағы ҚазҰУ-дың Басқарма
төрағасы – Ректоры

Құрастырушылар:

Кокеева Д.М., Бокулева Б.С., Др. Рама Деви

Әл-фараби университетінің 90 жылдығына және шығыстану факультетіндегі
хинди бөлімінің 25 жылдығына арналған «Үндістан және Еуразия елдеріндегі
үндітану зерттеулерінің бүгіні мен келешегі» тақырыбындағы халықаралық
ғылыми-тәжірибелік конференция материалдары. – Алматы: Қазақ университеті,
2024. – 206 б.

ISBN 978-601-04-6593-0

Бұл жинақта әл-фараби университетінің 90 жылдығына және шығыстану
факультетіндегі хинди бөлімінің 25 жылдығына арналған «Үндістан және
Еуразия елдеріндегі үндітану зерттеулерінің бүгіні мен келешегі»
тақырыбындағы халықаралық ғылыми-тәжірибелік конференцияның
материалдары енген. Жинақта әлем халықтарының басым бөлігі сөйлейтін
Үндістан Республикасының мемлекеттік тілі – хинди тілінің қалыптасу және
даму тарихы негізіндегі зерттелуімен қатар, тілдің үнді әдебиетінің,
мәдениетінің қалыптасуына әсер ету тарихы туралы отандық және шетелдік
үндітанушы ғалымдардың зерттеулері қамтылған.

Конференция материалдары отандық шығыстану ғылымына, оның ішінде
үндітану ғылымы мен тіліне, мәдениетіне, әдебиетіне, тарихына қызығушылық
танытқан ізденушілерге арналған.

Ескерту: Ұйымдастырушы комитет авторлардың мақала мазмұнына жауап бермейді.

नोट: आयोजन समिति लेखकों के लेखों की सामग्री के लिए ज़िम्मेदार नहीं है।

ISBN 978-601-04-6593-0

© Әл-Фараби атындағы ҚазҰУ, 2024

उल्पातखान मुन्नीबोवा, प्रोफेसरा
ताश्कन्द राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय,
ताश्कन्द, उज्बेकिस्तान
ulfatmuhib8@mail.ru

भारतीय जनता का साहित्य बहुभाषी साहित्य है। प्रत्येक राष्ट्रीय साहित्य का अपना इतिहास, साहित्यिक विरासत और प्रसिद्ध लेखक और कवि हैं।

हिन्दी साहित्य मुख्यतः भारत के उत्तरी क्षेत्रों में रचा गया साहित्य है। इसकी जड़ें निश्चित रूप से प्राचीन संस्कृत भाषा, प्राकृत, अपभ्रंश, शौकसेनी, ब्रज, खड़ी बोली जैसी प्रारंभिक और उत्तर मध्यकालीन भाषाओं से संबंधित हैं। आज की हिन्दी भाषा मुख्यतः खड़ी बोली पर आधारित है। उपरोक्त भाषाओं में भी साहित्य रचा गया, लेकिन मध्यकाल की सबसे बड़ी विरासत ब्रज भाषा में रचा गया भक्ति साहित्य है।

भक्ति आंदोलन, जो 15वीं शताब्दी में भारत के उत्तर में विकसित होना शुरू हुआ, बाबरी वंश के काल के दौरान समाज की मुख्य विचारधारा बन गया। हिंदू धर्म की आलोचना के फलस्वरूप पैदा हुए भक्ति आंदोलन का प्रमुख विचार आम लोगों को भगवान कृष्ण या राम के करीब लाना, उनके प्रति उनकी आस्था को मजबूत करना था। इसलिए भक्ति आंदोलन आम लोगों द्वारा बहुत अच्छी तरह से स्वीकार किया गया। आम लोगों ने जब से खुद को कृष्ण और राम के संरक्षण में महसूस किया तो इनके बीच से कई प्रसिद्ध कवि उभरके आये। उनकी कृतित्व से मध्यकाल में भक्ति साहित्य नाम का एक महान साहित्यिक विरासत पैदा हुआ। टैगोर की परिभाषा में, "भक्ति साहित्य वास्तव में लोक साहित्य है।"

भारतीय साहित्यिक विद्वानों ने अपने शोध कार्यों में लिखते हैं कि भक्ति के विचारों को बाबरी वंश के अकबर शाह, जहाँगीर, शाहजहाँ और यहाँ तक कि औरंगजेब ने भी अच्छा समर्थन दिया था। उदाहरण के लिए, ब्रज भाषा में लिखित स्मारक "चौरासी वैष्णवण की वार्ता" में लिखा है कि अकबर शाह ने अष्टछाप कवियों सूरदास और कुंभनदास से मुलाकात की, उनकी कविता का सम्मान करके उन्हें महल में आमंत्रित किया। जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी जैन भक्तों से मिलकर उनसे जैन धर्म के बारे में वार्तालाप करते और जैन भक्तों को दरबार में प्रभावशाली पदों पर नियुक्त करते थे।

भारतीय साहित्यकारों की पुस्तकों में लिखा है कि औरंगजेब को मल्लूकदास के भक्ति विचारों में रुचि थी और उन्होंने ने मल्लूकदास जी को महल में आमंत्रित किया और उनसे हिंदू धर्म के बारे में बात की। उदाहरण के लिए, औरंगजेब मल्लूकदास के साथ बातचीत में 84 वर्षीय मल्लूकदास पूछते हैं: "दादाजी, अगर आप भी मानते हैं कि अल्लाह एक ही है, तो फिर हिंदू लोग अल्लाह की इतनी सारी तस्वीरें कहाँ से लाते हैं, यह तो ईशनिंदा है।" तब मल्लूकदास जी ने ऐसा उत्तर दिया: "हां, इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर एक है, पर वही एक ईश्वर कहां-कहां में हम सभी में विद्यमान है, इसलिए सीधे भगवान को देखना असंभव है तो पक्षियों, प्राणियों, प्रकृति और हम सभी में ईश्वर को देखने में क्या बुराई है?" [5, 78] मेरी नज़र में ईश्वर के नाम पर लोगों को वर्गों में बाँटना असली ईशनिंदा है।

मल्लूकदास की कविताओं को उनके शिष्यों ने "मल्लूकदास ग्रंथ" में एकत्र किया था। भारतीय जनता की आध्यात्मिक एवं शैक्षिक सोच के विकास में बाबर एवं उसके वंशजों का योगदान, इस काल के सामाजिक-दार्शनिक विचारों की प्रणाली में भक्ति आंदोलन के प्राथमिकता सिद्धांत, प्राचीन संस्कृत महाकाव्यों के साथ भक्ति साहित्य का अटूट संबंध, कथा साहित्य में मानवीय अवधारणा को अग्रणी स्थान पर बढ़ावा देना, भक्ति के एकला चलो, निज आनंद, ज्योति के साधक, गुरुभक्ति जैसे रास्ते सूफीवाद साहित्य के साथ भक्ति साहित्य की निकटता को दर्शाता है, विशेष रूप से मध्य एशिया से भारत तक विकसित हुए नक्शबंदी और चिश्ती संप्रदायों के साथ।

भक्ति साहित्यिक विरासत की भाषा और शैली के संदर्भ में, रचनाओं में तत्सम, तद्भव, देशज, प्रांतिया तथा फ़ारसी और अरबी सहित अन्य भाषाओं से आये शब्दों का मिलना भक्ति साहित्य की भाषा और शैली के अनूठे पहलुओं को दर्शाता है।

भक्ति साहित्य के निर्माण के दौरान सात प्रकार के साहित्य थे - महल में तुर्की और फारसी, लोगों के बीच सिद्ध और नाथ साहित्य, जैन, सिख, सूफीवाद और भक्ति साहित्य।

इस काल की सबसे बड़ी साहित्यिक विरासत भक्ति और सूफी साहित्य है। सूफीवाद के साहित्य में नक्शबंदिया और चिश्तिया संप्रदायों के प्रतिनिधियों के विचार, जो मध्य एशिया से भारत आए और जनता के बीच उनके कई समर्थक थे, सबसे व्यापक रूप से फैले हुए हैं। सूफीवाद साहित्य के उदाहरण पहली बार फ़ारसी और हिंदी भाषाओं में XI-XII सदियों में बनाए गए थे, और इसका उत्कर्ष भक्ति साहित्य की अवधि के साथ मेल खाता है, यानी XVI-XVII सदियों में। सूफीवाद साहित्य के मुख्य उदाहरण हैं सईद मुहम्मद बंदनावोज़ द्वारा लिखित "मिराजुल-आशिकिन" (XIV), अमीनुद्दीन अली द्वारा "तारोनाई इश्क" (XIV), मौलाना दाऊद द्वारा "चंदायन" (XVI),

कुतुबन द्वारा "मृगावती" (XVI), जायसी की "पद्मावत" और "अखरावट" (XVI), मंजखान की "मधुमालती" (XVII), शेख नबी की "ज्ञानदीप" (XVII) और उस्मान की "चित्रावली" (XVII) का उल्लेख मिलता है।

जैन भक्त भी बाबरी सलतनत में रहते थे और उनके संरक्षण में रहते थे। अकबर शाह के महल में रहने और काम करने वाले जैन भक्तों में से अकबर ने हिरविजयसूरी को "जगद्गुरु" की उपाधि दी और 366 ब्राह्मणों को तर्क और शास्त्रार्थ में हराने के लिए विजयसेनसूरी को "सवाई हिरविजयसूरी" की उपाधि दी। उन्होंने सिद्धिचंद्रसूरी को उनके धार्मिक और दार्शनिक विचारों की तीक्ष्णता के लिए "खशफ हाम" की उपाधि दी। अबुल फजल की कृति "ओइनाई अकबरी" में हिरविजयसूरी, विजयसेनसूरी और भानुचंद्रसूरी जैसे जैन भक्तों के नाम दरबारी विद्वानों की सूची में शामिल हैं। जहाँगीर शाह ने जैन भक्तों के प्रति विशेष सम्मान भी दिखाया, जिसमें विजयदेवसूरी को "जहाँगीरी महातापा" की उपाधि भी दी। सत्यविजयजी, आनंदधन, यशोविजय, विजयानंदसूरी, विजयप्रभुसूरी जैसे जैन भक्त भी जहाँगीर के संरक्षण में महल में रहते थे और काम करते थे।

सगुण भक्ति में वैष्णव भक्ति साहित्य का सबसे बड़ी विरासत कृष्णभक्ति काव्य अष्टछाप के कवि गोविंदस्वामी, छितस्वामी, कृष्णदास, नंददास और मीराबाई द्वारा लिखा गया था जो 16-17 सदियों में रहते थे और जिनके कृतित्व का अपेक्षाकृत कम अध्ययन किया गया है। इसके अलावा, रामलिंगम जैसे भक्त कवि जो अपने स्वयं के भक्ति पथ पर हैं और दादू दयाल, रज्जब और मलूकदास जैसे संत कवियों की रचनाएँ निर्गुण भक्ति साहित्य में बहुत महत्व रखती हैं।

वैष्णव भक्ति साहित्य की कृष्णभक्ति और रामभक्ति दिशाएँ प्राचीन भारतीय महाकाव्यों "रामायण" और "महाभारत" से अटूट रूप से जुड़ी हुई हैं। भक्ति साहित्य में कवियों ने लोगों को भगवान राम और कृष्ण के करीब लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाभारत और रामायण महाकाव्यों की घटनाओं, उनके पात्रों का वर्णन करने और विभिन्न राष्ट्रीय परंपराओं और मूल्यों के बारे में अपने काव्य में कवियों ने कल्पना के विभिन्न कलात्मक साधनों का उपयोग किया।

ऐसे ही एक कवि हैं जैन भक्त आनंदधन (17वीं शताब्दी)। उन्होंने भक्ति में "एकल चलो", "निज आनंद" नामक भक्ति मार्ग की स्थापना की। इस मार्ग को भक्ति में "एकलवीर पंथ" भी कहा जाता है। कवि का आनंदधन उपनाम भी उनके चुने हुए भक्ति मार्ग के आधार पर रखा गया था। यह परिकल्पना की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना रास्ता स्वयं चुनेगा और उस पर स्वतंत्र रूप से यात्रा करेगा। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन जीने का तरीका और आस्था होती है, आनंदधन के भक्ति भाव के अनुसार कोई भी व्यक्ति किसी और के जीवन में नहीं रह सकता है और जीवन का परिणाम भी उसी का ही है। कवि के ऐसे विचार कन्फ्यूशियस के विचारों के समान हैं: "यह संभाव नहीं है कि कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति के साथ मिलकर सही रास्ते पर चल सकता है जिसके साथ वह एक साथ सीख सकता है।"

17वीं शताब्दी में रहे निर्गुण भक्त मलूकदास जी ने बाबरी वंश के अकबरशाह, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब का काल देखा। "संत वास्तव में किसी गुरु या किसी संप्रदाय से नहीं जुड़ते, उनके असली गुरु तो स्वयं भगवान ही हैं।" [5,11] ये शब्द मलूकदास के हैं। कबीर की तरह मलूकदास ने मानव हृदय की महिमा की, इस विचार को सामने रखा कि सर्वोच्च सत्य केवल मानव हृदय में ही मौजूद हो सकता है, और उनके भक्ति भाव का मतलब था - "दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करना"। जीवन में कवि का आदर्श वाक्य उनकी निम्नलिखित पद में परिलक्षित होता है:

भूख हीन तुक, प्यासे हीन पानी

ऐही भगती हरी के मनमाही। [5, 14]

भक्ति में "दादूपंथी" की स्थापना राजस्थान के दादू दयाल (16वीं शताब्दी) ने की थी। अकबर शाह उनके साथ लगातार संपर्क में थे और अकबर अक्सर दादू को विभिन्न बहसों के लिए महल में आमंत्रित करते थे। दादू जी अपने समय के सबसे ज्यादा शिष्यवाले गुरु थे। दादू दयाल के बारे में जानकारी अटकलों पर आधारित है। दादू की भक्ति भावना उनके विचारों में झलकती है: "मैं ब्रह्म का सेवक हूँ और निर्माता मेरा परिवार है।" [9,15] दादू दयाल ने आध्यात्मिक विकास के मार्ग में शिक्षक के महत्व पर जोर दिया।

संत रज्जब (XVII सदी) एक अन्य निर्गुण भक्त हैं जो बाबरी राजाओं से जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के युग देखा और उनका एक अद्वितीय विश्वदृष्टिकोण है। रज्जब दादू दयाल जी के पसंदीदा छात्रों में से एक हैं।

रज्जब की दुनिया, उसकी इबादतगाह, उसका वजूद और उसका ईमान ही उसका गुरु था। उसे लगा कि वह केवल अपने स्वामी के लिए ही जी रहा है और अपने जीवन के अंत तक उसने अपने स्वामी की सेवा में रहे। रज्जब ने शिष्य बनने की इच्छा व्यक्त करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुरु दादू जी की सिफारिश की और कहा था कि वह स्वयं गुरु बनने के योग्य नहीं हैं।

रज्जब ने हमेशा उन लोगों की आलोचना की जो जीवन और आस्था दोनों में झूठ, घमंड और दिखावे के रास्ते पर थे। एक दिन, जब एक दरवेश ने अपनी प्रशंसा करते हुए कहा, "मैं हमेशा नंगे पैर चलता हूँ, मैं अपने जीवन को कभी भी पैसे से नहीं बांधता और उसे इकट्ठा नहीं करता, यही दरवेशों की महानता है।" [2,78] तो रज्जब ने तुरंत दो पंक्तियों की कविता के साथ जवाब दिया:

पशु भी पैसा नहीं गाहें, नहीं पाहीं पैजर,

रज्जब ऐसे त्याग से, मिले न सिरजन हारा। [2,78]

एक कवि जो सगुण भक्ति में मोमबत्ती की रोशनी में विश्वास को शामिल करते हुए भक्ति के एक अपरंपरागत मार्ग का अनुसरण किया है, वह रामलिंगम (18वीं शताब्दी के अंत में) है। रामलिंगम के भक्ति मार्ग को “ज्योति के साधक” कहा जाता है। इसमें रामलिंगम की प्रकाश में आस्था का विश्लेषण किया गया है। उदाहरण के लिये फूलमंडली उत्सव ग्रीष्म ऋतु में मनाया जाता है। छुट्टी की विशिष्टता यह है कि सब कुछ फूलों से बना है।

सगुण भक्ति की कृष्णभक्ति दिशा महाभारत महाकाव्य के संबंध में विकसित हुई। सूरदास, परमानंददास, गोविंदस्वामी, कृष्णदास, छितस्वामी और नंददास ने इस काल के काव्य की सबसे समृद्ध साहित्यिक विरासत का निर्माण किया। भक्ति साहित्य ने भारत में बनी प्राचीन राष्ट्रीय परंपराओं की स्थिति को भारतीय समाज में मजबूत किया, उन्हें नए अर्थों से समृद्ध किया और लोगों के बीच उनका व्यापक प्रसार सुनिश्चित किया। ये परंपराएँ कृष्णभक्ति काव्य के प्रणेता अष्टछाप कवियों की रचनाओं में अत्यंत रोचक एवं सार्थक ढंग से व्यक्त हुई हैं।

गणगौर त्यौहार चैत्र माह में मनाया जाता है। ब्रज की लड़कियों द्वारा देवी गौरी और पार्वती की पूजा और विभिन्न खेलों से जुड़ा एक त्यौहार है। सुबह-सुबह, युवा लड़कियाँ हाथों में फूल लेकर देवी-देवताओं से प्रार्थना करती हैं। विशेषकर राजस्थान में यह त्यौहार बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। राजस्थान की एक भक्त कवयित्री मीराबाई ने भी अपनी कविताओं में रंगीन गणगौरी पूजा के बारे में लिखा है, ‘रे शावलिया, म्हारे आजा रंगीली गंगौरा है – जी।’ [

अक्षय तृतीया का त्यौहार बैशाख माह में मनाया जाता है। एक उत्सव जिसमें चंदन या अरगजा का पौधा लगाया जाता है, जो शरीर को एक सुगंधित खुशबू देता है। सूरदास और कृष्णदास दोनों ने इसके बारे में पद्य लिखे।

आजु बने नंद नंदन पी नवचंदन अंग अराजा लाएं।

रक्त हाए सुढार जलद मनि गुंजन अलकनि अलि स्मुदाएं।

पीत बसन तन बन्यौ है मिछौटा टेढी पाग ढौरें लटकाएं।

अक्षय तृतीया अक्षय लीला अक्षय “कृष्णदास” सुख पाएं। [13, 38]

वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला होली भी महाभारत महाकाव्य के समय का एक त्यौहार है। नंददास की कृतियों में भी इस विषय का विशेष स्थान है। होली को स्मर्तित अपनी कविता में, उन्होंने होली उत्सव के दौरान बजाए जाने वाले वाद्ययंत्रों को कविता के छंदों में शामिल करके ब्रज की संस्कृति को व्यक्त करने का प्रयास किया है:

बाजत ताल, मृदंग, मुरज, डफ कही न परत कुछ बात।

रंग सौं मनि ग्वाल-बाल सब, मानों मदन बरात। [14, 34]

कार्तिक स्नान पर्व में भारत में जल की पूजा होती है। नदियों को पवित्र मानना और उनसे प्रार्थना करने की परंपरा प्राचीन काल से ही बनी हुई है। उत्तर में गंगा और जमुना, दक्षिण में सरस्वती, ब्रह्मपुत्र, कावेरी नदियाँ पवित्र मानी जाती हैं। उदाहरण के लिए, छितस्वामी की कविता में हमें जमुना नदी की पवित्रता को स्मर्तित छंद मिलते हैं।

जब लगि जमुना गांड गोवर्धन गोकुल गांड गुसांई।

तब लगि श्री भागवत कथा-रस तब लगि कलिजुग नांई।

जब लगि सेवक, सेवाभाव-रस, नंद नंदन सों प्रीति लखाई।

छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल प्रगटे भक्तनि कों सुखदाई। [11, 11]

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि सबसे पहले, भक्ति साहित्य का विकास बाबरी वंश के शासनकाल के दौरान हुआ और बाबरी राजाओं ने इसके विकास में महान योगदान दिया। प्रत्येक बाबरी राजा अपने समय में रहने वाले विभिन्न भक्त कवियों और दार्शनिकों के साथ निरंतर संपर्क में रहता था और उन्हें दरबार के प्रतिष्ठित पदों पर नियुक्त करता था। भक्ति साहित्य का प्रचार अकबर शाह के शासनकाल में शुरू हुआ और इस परंपरा को उनके वंशजों, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब ने जारी रखा। अकबर शाह ने अपने शासनकाल में समानता, प्रेम, निष्ठा और सहिष्णुता जैसे भक्ति सिद्धांतों का अभ्यास किया; भक्तों और संतों के प्रति अपने गहरे सम्मान और विश्वास के कारण, उन्होंने उनकी रचनात्मकता के लिए स्वतंत्रता और अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान कीं।

सहायक सूची

1. गोवीन्ददास झा। गोवीन्ददास – दिल्ली, 2007
2. नंदकिशोर पांडेया संत रज्जबा – वाराणसी, 2007

3. द्वारकादास पारीख। चौरासी वैष्णवन की वार्ता। – पटना, 1979.
4. बलदेव वंशी। दादू ग्रन्थावली। – दिल्ली, 2005
5. बलदेव वंशी। मलूकदास। – दिल्ली, 2006
6. प्रभूदयाल मित्तल। अष्टछाप परिचय. – मथुरा, 1949
7. मलीक मुहम्मद वैष्णव भक्ति आंदोलन रामबक्ष। दादू दयाल। – दिल्ली, 2011
8. मध्यकालीन भारता – दिल्ली, 1990
9. राम बक्ष। दादू दयाल। – दिल्ली, 2011
10. रामकिशोर शर्मा। कबीर ग्रन्थावली। – ईलाहाबाद, 2003
11. वसंत यमदामिला छीतस्वामी। बीबा प्रेस. – दिल्ली, 2003
12. शिवकुमार मिश्रा। भक्ति आंदोलन और भक्ति साहित्य। – पटना, 2010.
13. हरगुलाल। कृष्णदास। – दिल्ली, 2001
14. सारला चौधरी। नंददास। शकुण प्रिंटर्स। – दिल्ली, 2006

प्रो.कृष्ण कुमार सिंह।	
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, भारत। भक्तिकालीन हिंदी साहित्य: ऐतिहासिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्य	75
प्रो. जावेद खोलोवा।	
पंजाब के पेटागोगिकल कॉलेज का सिद्धांत, ताजिकिस्तान। उन्नीसवीं सदी के उर्दू गद्य में शकुंतला और अन्य हिंदी पात्र	80
प्रो. एस एम इक़बाल।	
हिन्दी आचार्य एवं पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम। हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक संदर्भ	84
प्रो. के अजिता।	
वरिष्ठ आचार्य एवं संकाय अध्यक्षा मानविकी संकाय के डीन, कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय। कोचिन, केरल, भारत। हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक संपर्क	86
प्रो. उल्पातखान मुखीबोवा।	
तारकन्द राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय, तारकन्द, उज़्बेकिस्तान। हिन्दी साहित्य का मध्यकाल	89
प्रो. डॉ बलराम गुप्ता।	
शिवहर्ष किसान पीजी कॉलेज, हिन्दी विभाग, बस्ती, भारत। हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक सम्पर्क	93
प्रो. मुकेश कुमार मिश्रा। प्रिंसिपल कर्मा देवी स्मृति पी जी कालेज, संसारपुर, बस्ती, भारत। हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक विकास	99
प्रो. जयंत कर शर्मा।	
ओडिशा राज्य मुक्त विश्वविद्यालय। ओडिशा, भारत। हिन्दी भाषा और साहित्य के ऐतिहासिक विकास में अपभ्रंश की भूमिका	103
डॉ. साईदा मिरजायेवा।	
आज़ेरबैजान भाषाई विश्वविद्यालय, बाकू, अज़रबाइजान। हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक विकास	113
प्रो. (डॉ.) रमा देवी।	
प्राचार्या, हंसराज महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत। हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक संपर्क	117
उपेंद्र पाण्डेय।	
कवि, वित्त मंत्रालय भारत सरकार हिन्दी सलाहकार समिति सदस्य, भारत। हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक विकास	120
डॉ मैक्सिम डेम्चेन्को।	
मॉस्को राज्य भाषाई विश्वविद्यालय। हिन्दी साहित्य का ऐतिहासिक विकास: हिन्दी साहित्य के निर्माण में अवध की कविता की भूमिका	126
प्रो. (डॉ.) दरीगा कौकेवा।	
कज़ाख़स्तान के अल-फ़राबी के नाम पर कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के सह-प्राध्यापक। स्मृति शैली में लिखे गए धार्मिक-दार्शनिक ग्रंथों का अध्ययन (भागवत गीता पर आधारित)	129
डॉ. मेरुएर्त पेरेनेकुलोवा।	
अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, कज़ाख़स्तान। अबइ कुनानबायेव और रवीन्द्रनाथ टैगोर की कृतियों में मानवता के शाश्वत मूल्य	133
अलीपबेवा बोता।	
अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की डॉक्टरेट छात्रा। प्रेमचंद और आधुनिक उपन्यास	136
अबिलमाज़िनोवा ज़ारिना, उरुमोवा तोज़ाना।	
अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, कज़ाख़स्तान। र.क. नारायण की "दादी की कहानियाँ" में महिला छवि	140
अब्दिकेन आयगेरिम मराटोवना।	
अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, कज़ाख़स्तान। आधुनिक हिन्दी साहित्य में बदलते मूल्य।	145
खंड - 4 हिंदी भाषा सिखाने के तरीके	154
आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद।	
भारत के प्रधान मंत्री के अधीन केंद्रीय हिंदी समिति के सदस्य। विदेशों में हिंदी भाषा सिखाने के तरीके: कुछ समस्याएं	154
प्रो. बीना शर्मा।	
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, भारत। हिंदी भाषा सिखाने के तरीके	156
प्रो. ल्युदमीला विकटोरोवना खोखलोवा।	
एम्सोशियेट प्रोफ़ेसर अफ्रीका और एशिया अध्ययन संस्थान, मास्को विश्वविद्यालय, मास्को, रूस। मास्को विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा सिखाने के तरीके	161
डॉ संतोष कुमारी अरोड़ा।	
रूस-आर्मेनियाई विश्वविद्यालय के प्राच्य संस्थान का "वेद" केन्द्र और भारतविद विभाग। आर्मेनिया हिंदी शिक्षण में अनुवाद की कुछ समस्याएं: रूसी, हिंदी और आर्मेनियाई में मुहावरे	165

Шығарушы редакторлар:

Кокеева Д.М., Др. Рама Деви, Бокулева Б.С.

Әл-фараби университетінің 90 жылдығына және шығыстану факультетіндегі хинди бөлімінің 25 жылдығына арналған «ҮНДІСТАН ЖӘНЕ ЕУРАЗИЯ ЕЛДЕРІНДЕГІ ҮНДІТАНУ ЗЕРТТЕРУЛЕРІНІҢ БҮГІНІ МЕН КЕЛЕШЕГІ» тақырыбындағы халықаралық ғылыми-тәжірибелік конференция МАТЕРИАЛДАРЫ

संपादक एवं संकलक:

प्रो. (डॉ.) दरीगा कौकेवा., प्रो. (डॉ.) रमा देवी., डॉ. बोता बोकुलेवा

अल-फ़राबी कज़ाख़ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की 90वीं वर्षगांठ और प्राच्य अध्ययन संकाय के हिंदी विभाग की 25वीं वर्षगांठ को समर्पित "भारत और यूरेशिया में हिन्दी का वर्तमान और भविष्य" अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय वैज्ञानिक-व्यावहारिक सम्मेलन के लेखों का संग्रह। -
अल्माटी: कज़ाख़ विश्वविद्यालय, 2024 – 215 पृष्ठ।

ИБ №15265

Басуға 06.03.2024 жылы қол қойылды. Таралымы: 100 дана
Пішімі 60x84/8. Көлемі 17,0 б.т. Тапсырыс № 403

«Қазақ университеті» баспа үйі,
050040, Алматы қ. Әл-Фараби даңғ., 71

Әл-Фараби атындағы Қазақ ұлттық университеті